विवाह

टिप्पणियाँ —

विवाह: पाठयक्रम

कक्षा #१:

I. परिचय।
II. विवाह: एक सामान्य बाइबल अध्ययन।
III. विवाह और विवाह की भूमिका:
    क. परिचय।

कक्षा #२:

III. विवाह और विवाह की भूमिका:
    क. परिचय। (जारी...)
    ख. सृष्टी का आलोकिक क्रम।

कक्षा #३:

III. विवाह और विवाह की भूमिका:
    ख. सृष्टी का अलौकिक क्रम। (जारी.)
    ग. सृष्टी का अलौकिक क्रम। (जारी.)

कक्षा #४:

III. विवाह और विवाह की भूमिका:
    ग. विवाह में कार्यात्मक भूमिकाएं क्या है?

कक्षा #५:

III. विवाह और विवाह की भूमिका:
    घ. विवाह के सम्बन्धों की समानताएं।
    ङ. निष्कर्ष
    परीक्षा

विवाह

टिप्पणियाँ —

परीक्षा

सम्भाबित २० सूत्रीय प्रश्न

१) सृष्टी का हवाला देकर इस सत्य की रक्षा करें कि महिलायें पुरुषों के बराबर हैं (पृष्ठ २४४, २४५)।

२) पत्नी के लिए बाइबल आधारित अधीनता क्या है (पृष्ठ २५९-२६२)?

३) पति के लिए बाइबल आधारित भूमिका का वर्णन करें (पृष्ठ २६५-२६७)।

सम्भाबित १० सूत्रीय प्रश्न

१) विवाह के प्रति परमेश्वर के उद्देश्यों को बताएं। वचन के संदर्भ को शामिल करें। (पृष्ठ २४२)।

२) विवाह के संबंध आलंकारिक है? दो उदाहरण दीजिये (वचन के साथ; पृष्ठ २४३)।

३) विवाह की भूमिका को समझाने के लिए जब हम अनुक्रम का उपयोग करते हैं तो हमारा उससे क्या अर्थ होता है (पृष्ठ २४९)?

४) विवाह के भीतर की "सही मंशा" क्या है (पृष्ठ २५४)।

५) एक या दो वाक्यों में "५०/५०" प्रेम और "१००/१००" प्रेम के मध्य की विभिन्नओं का वर्णन करें (पृष्ठ २६४)।

६) पहचान की अवधारणा और संबंधपरक भूमिका का त्रिएकता का इस्तेमाल कर और विवाह में संबंधपरक भूमिकाओं की अवधारणाओं की पहचान करें (पृष्ठ २७१)।

७) त्रिएकता में पहचान और संबंधपरक भूमिकाओं की अवधारणाओं का उपयोग विवाह में पहचान और संबंधपरक भूमिकाओं की अवधारणाओं के सादृश्य के रूप में करें (पृष्ठ २७१)।

विवाह

टिप्पणियाँ —

I. परिचय।

क. विवाह की महत्वपूर्णता।

१. परिवार समाज की सबसे बुनियादी इकाई है।

क. परिवार की सबसे बुनियादी इकाई विवाह का सम्बन्ध है। पति पत्नी के बीच का सम्बन्ध मानवजाति के बीच का सबसे ज़्यादा बुनियादी सम्बन्ध है।

ख. विवाह आरम्भिक मानवीय सम्बन्ध है क्योंकि इसको अदन के वाटिका में परमेश्वर ने स्थापित किया था।

२. ऐसा कहा गया है कि विवाह वह नहीं है कि किसी ऐसे व्यक्ति को खोज लेना जिसके साथ आप रह सकें, परन्तु ऐसे व्यक्ति को खोजना है जिसके बिना आप रह ही नहीं सकते।

क. यह कथन इस बात को उजागर करता है कि परमेश्वर की सर्वोच्चता ने दो लोगों को एक साथ रखा है।

ख. यह विवाह के महत्व को उजागर करता है, विवाह दूसरे को पूर्ण करने का कार्य करता है। वास्तव में, वचन के आधार पर, स्त्री को पुरुष की सहायक या परिपूरक होने के लिए रचा गया था (उत्पत्ति २:१८)।

ख. इस पाठ्यक्रम की विषय-वस्तु।

१. पहला, हम विवाह के विषय पर संछिप्त सामान्य बाइबल अध्ययन देंगे।

२. दूसरा हम विशेष रूप से विवाह की भूमिका को समझने के संदर्भ का अधिक अध्ययन करेंगे, कि बाइबल विवाह और पति-पत्नी के सम्बन्ध के बारे में क्या बताती है।

टिप्पणियाँ —

II. विवाह: सामान्य बाइबल अध्ययन।

क. उत्पति २:१८-२४ का अध्ययन।

१. पहले हम देखते हैं कि परमेश्वर ने पुरुष के लिए "सहायक" को बनाया (पद १८-२२)।

क. इब्रानी भाषा में "सहायक" शब्द का अनुवाद किया गया है जिस शब्द का अर्थ है "पूर्णता या पूरक।"

ख. अर्थात, स्त्री पुरुष के लिए परिपूरक है, और वह उसके लिए पूरक है और उसे पूर्ण करती है।

२. पद २३ में, हम पुरुष के प्रतिउत्तर को इस सृष्टि को जो कि "सहायक" है को देखते हैं।"

क. मुख्य बिन्दु यह है कि पुरुष स्त्री दोनों स्वभाविक रूप से सम्बंधित है क्योंकि स्त्री को पुरुष में से निकाला गया है।

ख. इनका सम्बन्ध स्वाभाविक और अन्तरंग है।

३. अंतता, पद २४ में, हम उस वास्तविकता की घोषणा को देखते हैं जो विवाह की संस्था में की गयी थी।

क. "**इस कारण**": विवाह की संस्था का अस्तित्व सर्वोच सिर्जनहार परमेश्वर के चुनाव पर आधारित है।

१) स्त्री और पुरुष की रचना के **कारण** ("इस कारण से") विवाह स्थापित किया गया।

२) क्योंकि परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री को बनाया है, इसलिए विवाह है, यह तर्क संगत है, स्वाभाविक, और अन्तरंग है।

ख. **"पुरुष अपने माता – पिता को छोड़कर"** पुरुष ही पहल करता है।

१) वह अपने मूल परिवार छोड़कर एक नए परिवार की शुरुआत करे।

२) उसकी नयी प्राथमिकता अवश्य ही वह नया परिवार होना चाहिये।

टिप्पणियाँ —

ग. **"और अपनी पत्नी से मिला रहेगा":** यह नयी शुरुआत पुरुष और स्त्री दोनों को शामिल करती है।

१) पुरुष अवश्य है कि वह छोड़े और मिला रहे अर्थात वह पुराने को पीछे छोड़े और नए के साथ जुड़ जाये।

२) "मिला रहे" शब्द स्थिरता के विचार को दर्शाता है यह कोई अस्थायी प्रबंध नहीं है बल्कि यह एक स्थायी और मज़बूत सम्बन्ध है।

घ. **"और वे दोनों एक तन होंगें"**: इसका परिणाम यह होता है कि पुरुष और स्त्री इतने एकजुट हो जाते हैं कि वे सृष्टि के मूल की रचना को प्रतिबिन्धित करते हैं, वे मूल रूप से और वास्तविक रूप से एक थे (क्योंकि स्त्री पुरुष में से निकाली गयी थी)।

१) "होंगे" शब्द यहाँ पर हमको इस बात की तरफ केन्द्रित करता है कि हम इसे विवाह की प्रक्रिया कह सकते हैं अर्थात यह की सम्बन्ध बना है इसे और बेहतर और सिद्ध बनाने के लिए समय के साथ काम किया जाता है।

२) "एक देह" यह विचार इस बात का प्रतिक है कि विवाह का सम्बन्ध एक ही पहचान को बनाता है, यह विवाह में यौन सम्बन्धों के पहलू को भी दर्शाता है यह एक संगठित और अन्तरंग सम्बन्धों की ओर इशारा करता है।

३) "वे" शब्द बहुत महत्वपूर्ण है हालाँकि वे संबध के द्वारा एक देह बन जाते हैं, वे यह इसलिए करते हैं कि "वे" हैं, अर्थात, वे उन में से दो हैं, संगठित हैं परन्तु अलग हैं, एक साथ हैं परन्तु व्यक्तिगत।

४) यह बात याद रखना बहुत महत्वपूर्ण होगा जब हम विवाह की भूमिका के इस पाठ्यक्रम के अगले भाग में इस विषय पर बात करेंगें।

४. हमारे बाइबल अध्यन का निष्कर्ष।

क. विवाह का सम्बन्ध परमेश्वर द्वारा स्थापित किया गया है।

ख. यह मनुष्यों के सभी सम्बन्धों की बुनियाद या शुरुआत है।

टिप्पणियाँ –

चर्चा का बिन्दु

निम्नलिखित सन्दर्भों आधार पर समझ की घटी के कारण जो विवाह में आधुनिक समस्याएँ हैं उन पर चर्चा करें:

- सहायक/परिपूरक
- छोड़ना/मिले रहना
- वे एक तन होंगे

ख. विवाह के लिए परमेश्वर का उद्देश्य।

१. विवाह को परमेश्वर की छवि को दिखाने के लिए दर्पण के रूप में इस्तेमाल किया गया है, एक त्रिएक परमेश्वर (उत्प. १:२६) जो त्रिएकता में काम करते हैं और उस एकता में मनुष्य के अपने स्वयं के स्वरुप में रचना करते हैं ताकि वे भी आवश्यक रूप से एकता और एकजुता में रहकर कार्य करें (जो कि पुरुष और स्त्री है उत्पत्ति १:२७ और ५:१)।

२. ईश्वरीय विरासत को गुणात्मक तरीके से बढ़ाने के लिए विवाह को सृजा गया है (उत्पत्ति १:२८; मला २:१४, १५)।

३. पुरुष द्वारा परमेश्वर की सृष्टि का प्रबंध करने के लिए विवाह को उसको एक हिस्से के रूप में सृजा गया था (उत्पत्ति १:२८)।

४. विवाह पुरुष और स्त्री को आपस में एक दूसरे को सम्पूर्ण करने के लिए सृजा गया है (उत्पत्ति २:१८-२४)।

५. विवाह मसीह के सम्बन्ध को जो कलीसिया साथ है उसका आदर्श है (इफि. ५:२३-३२)।

६. विवाह अनैतिक स्वभाव को हतोत्साहित करने के लिए भी इस्तेमाल किया गया है (१कुरि. ७:२, ९)।

७. विवाह को सम्पूर्ण संतुष्टी प्रदान करने के लिए सृजा गया है (नीति. ५:१९)।

टिप्पणियाँ —

विवाह के पहलू:

विवाह के सम्बन्धों का वर्णन:

आदर के योग्य समझा जाये (इब्रा १३:४)।
यह स्थायी होना चाहिये (मती १९:६)।
वैवाहिक सम्बन्ध आलंकारिक है।

इस्राएल के साथ परमेश्वर का मिलन (यशा ५४:५)।
कलीसिया के साथ मसीह का मिलन (इफि ५:२३-३२)

विवाह की विधि:

यीशु ने उसकी वैधता को पहिचाना (यूहन्ना २:१-११)।
ये आनंद के बराबर है (यिर्मयाह ७:३४)।

III. विवाह और विवाह की भूमिका।

क) परिचय।

१. विवाह का महत्व। विवाह की भूमिका समझने से पहले, हमें पहले विवाह के महत्व को समझना चाहिये।

क. हम पहले ही इस बात को प्रदर्शित कर चुके हैं कि विवाह परमेश्वर द्वारा स्वयं स्थापित किया गया है (उत्पत्ति २:१८, २४)। यह मनुष्य का अविष्कार नहीं है।

१) इसकी स्थापना की गयी क्योंकि यह अनिवार्य था (उत्पत्ति २:१८, २०)।

२) यह एक उन्नति के रूप में स्थापित किया गया था (उत्पत्ति २:२२-२४)।

क) उन्नति का आरम्भ उस समय हुआ जब स्वयं परमेश्वर जोड़े को एक साथ लेकर आता है (पद २४)।

ख) मूल पारिवारिक सम्बन्धों को नए पारिवारिक सम्बन्धों के साथ बदल दिया जाता है (छोड़े और मिले रहें: पद २४)।

ग) यह एक स्थायी सम्बन्ध है (एक देह: पद २४)।

टिप्पणियाँ —

ख. विवाह पुरुष के लिए मार्ग तैयार करता है कि वह सम्पूर्ण हो जाये ("सहायक" शब्द के अर्थ पर हमारे टिप्पणियों की समीक्षा करें)।

१) इफि. ५ में हमें सीधा सम्बन्ध स्थापित मिलता है जो कि मसीह और पति और कलीसियाई देह और पत्नी के बीच की समानता को दिखाती है।

२) इसको ध्यान में रखते हुए इफि. १:२३ को पढ़ें।

क) इसको ध्यान में रखते हुए इफि १:२३ को पढ़ें।

ख) इफि. ५ की समानता का इस्तेमाल करते हुए, हम यह कह सकते हैं कि पत्नी पति की "परिपूर्णता" है। अर्थात, वह उसे पूर्ण करती है ("ध्यान दें कि कैसे यह "सहायक" शब्द के अर्थ के साथ अनुरूप है")।

चर्चा का बिन्दु

जो लोग विवाहित हैं, वे लोग गवाहियों को साझा करे कि विवाह आपको कैसे परिपूर्णता तक लेकर आया है।

२. हीनता बनाम समानता। स्त्री, पुरुष से कम नहीं है, वे एक दूसरे के लिए एक समान है।

क. सृष्टि में स्त्रियाँ, पुरुषों के समान हैं।

१) परमेश्वर ने पुरुष को बनाया। परमेश्वर ने स्त्री को भी बनाया, परमेश्वर सीधे और समान तरीके से दोनों की सृष्टि करने में शामिल थे।

२) स्त्री पुरुष के द्वारा नहीं बनायी गयी (पुरुष उसके सृजे जाने के समय सो रहा था)। स्त्री पुरुष में से बनायी गयी थी। वह परमेश्वर द्वारा बनायी गयी थी।

३) पुरुष और स्त्री के बीच की भिन्नता सृष्टि के अलौकिक क्रम पर आधारित है।

४) पुरुष और स्त्री की समानता इस तथ्य पर आधारित है कि दोनों के सृजनहार एक ही हैं।

क) पुरुष परमेश्वर से कमतर है क्योंकि परमेश्वर ने उसे सृजा है।

ख) घड़ा कुम्हार से कमतर है क्योंकि कुम्हार ने उसे बनाया है।

ग) स्त्री, पुरुष से कमतर है यह गलतफ़हमी वहां से आती है जब हम इस बात से सम्बंधित गलत समझ रखते हैं कि स्त्री को किसने बनाया है। पुरुष ने स्त्री को नहीं बनाया था, परमेश्वर ने स्त्री को रचा तथा पुरुष व स्त्री के एक ही सृजनहार हैं।

चर्चा का बिन्दु

पिछली धारणाओं का इस्तेमाल करके इस तथ्य पर चर्चा करें कि स्त्री पूर्ण रूप से पुरुष की सृष्टि के समान्तर है, आपकी संस्कृति में कौन सी ऐसी बाधाएँ निकलकर आती हैं जो आपके अंदर इस दृष्टिकोण को रोकती है?

ख. मानवजाति की दौड़ की निरन्तरता में स्त्रियाँ पुरुषों के बराबर हैं।

१) अध्ययन १ कुरि. ११:११,१२।

२) यदि एक व्यक्ति अपने अस्तित्व के लिए दूसरे पर निर्भर रहता है तो उस व्यक्ति को कम नहीं समझा जायेगा वे समान तरीके से परस्पर एक दूसरे पर निर्भर है।

क) यह पुरुष और स्त्री दोनों के लिए सत्य है कि वे दोनों अपनी तरह जारी रखने के लिए निरन्तर एक – दूसरे पर निर्भर रहते हैं।

ख) दो स्त्रियाँ मानवजाति को आगे नहीं ले जा सकती और न ही दो पुरुष मानवजाति को आगे जा सकते हैं, इसके लिए पुरुष और स्त्री दोनों का होना ज़रूरी है, वे दोनों एक दूसरे पर अपने अपने अस्तित्व के लिए एक दूसरे पर निर्भर हैं इसलिए वे दोनों समान है।

ग) पुरुषों और स्त्रियों के बीच मौजूद श्रेणीबद्ध भिन्नता उनकी पहचान पर आधारित नहीं है परन्तु वे अपनी अपनी भूमिका को एक दूसरे के साथ कैसे जोड़ पाते इस पर निर्भर करता है।

टिप्पणियाँ –

३) पुरुष और स्त्री उनकी पहचान में एक समान है।

४) वे उनकी भूमिकाओं में भिन्न है, जब हम इस बात को कहते हैं कि पुरुष और स्त्री एक बराबर है इसमें यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि वे एक जैसे है।

ग. "स्त्रियों को कम" समझने की जो सैद्धांतिक गलती है वह गलत तर्क पर आधारित है।

१) एक वरिष्ठ इब्रानी गुरु ने कहा कि स्त्री पुरुष से कम है क्योंकि हव्वा को आदम में से बनाया गया था इस प्रकार के तर्क का अर्थ तो यह होगा कि पुरुष मिट्टी से कम है क्योंकि वह मिट्टी में से बनाया गया।

२) इस वरिष्ठ इब्रानी गुरु ने यह भी कहा कि स्त्री पुरुष से कम इसलिए भी है क्योंकि वह आदम के बाद बनायी गयी।

क) यदि यह सही है तो क्या पुरुष जानवरों से कमतर है क्योंकि जानवरों को उस से पहले सृजा गया था?

ख) वास्तव में, स्त्री को पुरुष में से बनाया गया है और वही उनकी बराबरी को स्थापित करता है, वह वही है, जिसकी घोषणा आदम करता है, मेरी हड्डी में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस वे एक दूसरे के हिस्से हैं और इसलिए इनकी पहचान बराबर है।

ग) पुनः, यह बात इनकी भिन्नताओं को अनदेखा नहीं करती, कि स्त्री पुरुष में से और उसके बाद रची गयी, वहां कार्य करने का एक अलौकिक क्रम है, इस प्रकार, यहाँ पुरुष और स्त्री के बीच के सम्बन्धों के अंदर में भी एक अलौकिक क्रम पाया जाता है, यह विवाह की भूमिका का आधार है।

चर्चा के बिन्दु

क्या आपके संस्कृति या धार्मिक पृष्ठभूमि ने कभी आपको सिखाया कि स्त्री पुरुष से कम है? यदि ऐसा है, तो क्या आप तैयार हैं कि आप इस प्रकार की सोच को सही करने के लिए? आप इसकी शुरुआत कलीसिया में कर सकते हैं, आप इस विषय के ऊपर चर्चा करें।

टिप्पणियाँ —

घ. यीशु अपने समय के दौरान में इस बुरे तर्क के विरोध में आ खड़े हुए, लेकिन पश्चिमी दुनिया में प्रचलित आधुनिक महिला मुक्ति आंदोलन की वकालत कभी नहीं करते।

१) यीशु ने फरीसियों के दोहरे मापदण्डों के प्रति उनको फटकार लगाई जो उनके भेदभाव और महिलाओं के प्रति पूर्वाग्रह के कारण से बने हुए थे (देखें मत्ती ५:२८)।

२) उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उन्होंने पुरुष और स्त्री दोनों को पाप के प्रति बराबर की ज़िम्मेदारी के रूप में देखा।

३) हालाँकि, यीशु ने कभी भी महिला मुक्ति का समर्थन नहीं किया जैसा कि आज पश्चिमी दुनिया में बढ़ावा दिया जा रहा है।

४) उन्होंने इस बात को समझा की पुरुष और स्त्री भिन्न हैं।

क) आधुनिक महिला मुक्ति आंदोलन वास्तव में मुक्ति के विपरीत प्रस्ताव करता है, उन्हें एक महिला के रूप में पूर्णता से मुक्त किया जाना चाहिये। एक महिला होने के अस्तित्व से मुक्त होना कोई स्वतंत्रता नहीं है।

ख) महिला मुक्ति आंदोलन महिलाओं को पुरुषों के बराबर नहीं बनाना चाहती हैं, लेकिन वह पुरुषों और स्त्रियों को एक जैसा बनाना चाहती हैं।

ग) पुरुष और स्त्री एक बराबर हैं, वे एक जैसे नहीं हैं, यह जितना स्पष्ट रूप से होना चाहिये वह इस निष्फल और पापी संसार में नहीं देखा जा सकता है (देखें रोमियों १:१८-३२)।

चर्चा के बिन्दु

आधुनिक महिला मुक्ति आंदोलन (विशेषकर वे जो पश्चिमी दुनिया से प्रभावित है) ने आज की महिलाओं की वास्तविक भूमिका को किस प्रकार से सहायता की और चोट पहुंचाई है।

टिप्पणियाँ –

५) स्त्रियाँ मसीह में पुरुषों के बराबर हैं।

६) यह गिरी हुई मानवता है जिसने स्त्रियों को कमतर बना रखा है, परन्तु सृष्टि के आरम्भ से ऐसा नहीं था।

क) छुटकारा इस गिरी हुई मानवता को वापिस उस मूल अभिप्राय में लेकर आ गया है, मानवजाति का छुटकारा परमेश्वर के मूल अभिप्राय में पाया जाता है, इसलिए, सही मायने में, मसीह स्त्रियों को मुक्त करते हैं।

ख) वह महिलाओं और पुरुषों के बीच की असमानताओं को सही ढंग से लागू करने के लिए पुरुषों और स्त्रियों की समानताओं को समझने के हेतु पुरुषों के दिमाग को सक्षम होने के लिये छुड़ाता है।

ङ. हमने देखा है कि स्त्रियों और पुरुषों की पहचान में कोई भी भिन्नता नहीं पाई जाती है (उनकी पहचान मसीह में है) स्त्रियों और पुरुषों के बीच की असमानताएं परमेश्वर के सर्वोच्चता के सम्बन्धों में पाई जाती है जो कि सृष्टि के समय से स्थापित किया गया था।

चर्चा के बिन्दु

निम्नलिखित वचनों का उपयोग करके चर्चा करें कि बाइबल पुरुषों और स्त्रियों की समानता के बारे में क्या कहती है उत्पत्ति ५:१, २; उत्पत्ति १:२७; गला. ३:२८; इफि. ५:२८; और १ पतरस ३:७।

ख. सृष्टि का अलौकिक क्रम।

१. हाँ, पति और पत्नी पहचान के मामले में एक समान हैं, अब हमें ये पूछने की आवश्कता है कि, क्या वे एक - दूसरे से सम्बन्धित हैं?

क. परिवार समाज की एक बुनयादी इकाई है।

ख. परिवार के क्रम में, पत्नी पति की अधीनता में है जैसे की बच्चे माता-पिता के अधीनता में है, एक अलौकिक रूप से नियुक्त अधिकारिक ढांचा स्थापित किया गया है।

३) हमें यह दोहराने की ज़रुरत है कि पति, पत्नी, और बच्चे सब मानवीय रूप की पहचान के अर्थ में एक समान हैं।

४) यह इस मामले में भिन्न हैं कि वे परिवार में कैसे कार्य (भूमिका) करते हैं।

ग. त्रिएकता के क्रम में, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा पर एक निश्चित प्रधानता है, हालाँकि तीनों समान रूप से परमेश्वर हैं अर्थात, वे अपनी पहचान में एक हैं पर कार्य और भूमिका में अलग हैं, त्रिएकता में अलौकिक रूप से नियुक्त अधिकारिक ढांचा स्थापित किया गया है।

चर्चा के बिन्दु

निम्नलिखित आकृति का इस्तेमाल करके सृष्टि के क्रम पर चर्चा करें सृष्टि के क्रम और नीचे दी गयी आकृति के सम्बन्ध १ कुरि ११:३ पर विचार करें।

समानता हैं: पहचान	भिन्न हैं: कार्य/भूमिका/सम्बन्धों का क्रम
पुरुष = स्त्री = बच्चा	पुरुष || स्त्री || बच्चा १ कुरि. ११:३ इफि ६:१ आधिकारिक ढांचा
पिता = पुत्र = पवित्रात्मा	पिता || पुत्र || पवित्रात्मा यहुन्ना ३:१६ प्रेरितों. १३:३३ यूहन्ना १५:२६ यूहन्ना १६:१४ आधिकारिक ढांचा

२. हम इस से क्या समझते हैं जब हम पदानुक्रम शब्द का उपयोग करते हैं?

क. पदानुक्रम यह नहीं दर्शाता है कि पुरुष और स्त्री किस योग्य हैं, पर वह इस बात को ज़रूर दर्शाता है की परमेश्वर द्वारा स्थापित क्रम के आधार पर हर एक किस स्तर को लेते हैं।

ख. पदानुक्रम का अर्थ हीनता और श्रेष्टता नहीं हैं क्योंकि यह कार्य करने का एक पदानुक्रम है यह गौरव या मूल्यवान होने का पदानुक्रम नहीं है।

ग. पदानुक्रम कार्य और क्रम को एक पदानुक्रम की ओर निर्देशित करता है, क्योंकि यह ज़िम्मेदारी और अधिकार का एक पदानुक्रम है जिसे सृष्टि के समय स्थापित किया गया था।

टिप्पणियाँ —

अपने उदाहरण को लिखें:

३. अध्ययन इफि ५:२२-२४।

घ. पौलुस कहते हैं कि पति पत्नी का सिर है पर वह यह नहीं कहते कि पति पत्नी से आगे है।

१) पति उसके कार्यों और संबंधपरक स्थिति में पत्नी का सिर है।

२) वह श्रेष्ठता और पहचान में आगे नहीं है।

ङ. इफि. ५ में पौलुस दो एक समान लोगों के दो अलग अलग कार्यो के बारे में बताते हैं।

१) अर्थात, पति और पत्नी के कार्य अलग हैं, असमान नहीं, साधारणता क्योंकि वे अलग हैं और परमेश्वर के क्रम में उनके अलग कार्य हैं इसका मतलब यह नहीं हैं कि वे एक बराबर नहीं है।

२) पुनः, इसके लिए कारण यह है कि पुरुष और स्त्री दोनों एक बराबर हैं और भिन्न भी हैं।

क) यह कहना कि एक व्यक्ति दूसरे से कम है यह एक घमंडी और अत्याचारी पुरुष की सामान्य गलती है।

ख) यह कहना कि एक व्यक्ति दूसरे के बराबर है, यह विद्रोही और भ्रमित स्त्रियों की लोकप्रिय गलती है (सामान्यतया यह पश्चिमी दुनिया के महिला मुक्ति आन्दोलन में देखा गया है)।

टिप्पणियाँ –

अपना उदाहरण लिखें:

४. समीक्षा करें उत्पत्ति २:१८-२४।

क. हम इस पति – पत्नी के समानता के खण्ड का अध्ययन पहले ही कर चुके हैं, अब हम यह देखेंगे की पति-पत्नी भिन्न कैसे हैं।

ख. जिन कामों के अनुक्रम का वर्णन पहले किया गया था वह मनुष्य के पतन का परिणाम नहीं है। यह ईश्वरीय चुनावों तथा सृष्टि के समय में संगठन का परिणाम है (१तीमुथियुस २:१३ पर विचार करें)।

१) स्त्री पुरुष में से बनायी गयी है।

२) स्त्री पुरुष के लिए बनायी गयी है।

३) स्त्री पुरुष को दी गयी है।

४) स्त्री का नाम पुरुष द्वारा रखा गया है।

टिप्पणियाँ –

५. निष्कर्ष।

क. इस प्रकार, विवाह के सम्बन्धों को छुड़ाने का मतलब यह नहीं है की यह पति-पत्नी के भिभिन्न कार्यों और भूमिका को नकार देता है, इसके बजाय, पतित समाज द्वारा दूषित किये जाने के बाद, यह कार्यों को और मज़बूत बनाता है।

१) जब कार्य और भूमिका मज़बूत होते हैं, तब विवाह भी मज़बूत है, बिना सही समझदारी और अभ्यास के यह कार्य और भूमिका के, परिवार गड़बड़ी में धकेल दिया जायेगा, और इसमें क्रम और एकता की कमी होगी।

२) हां, ज़रूरी है कि परिवार एक क्रम हो कोई व्यक्ति परिवार की अगुवाई करे, यह अगुवाई की ज़िम्मेदारी स्पष्ट रूप से पति और पिता को दी गयी है और उसका अधिकार सबके द्वारा स्वीकार किया जाना चाहिये।

ख. इस आदेश की आवश्यकता अन्य सभी प्रकार की संगतियों में भी सच है, स्थानीय कलीसिया के लिए उदाहरण के ध्यान दें।

१) एक स्थानीय कलीसिया के अन्दर कार्य करने का एक निश्चित पदानुक्रम है।

क) कलीसिया के सदस्यों को पासबानों के अधीन रहने की आवश्यकता है (देखें १कुरि. १६:१६; १थिस्स. ५:१२,१३; इब्रा. १३:७)।

ख) उसी प्रकार एक पासबान या अगुवा निस्वार्थ भाव से कलीसिया के सदस्यों की सेवा करता रहे और उनके प्रति समर्पित रहे (देखें १ कुरि. १६:१५, १६)।

२) परिवार के अंदर भी कार्यों को करने का एक पदानुक्रम है।

क) पत्नी – पति को अधीन रहने की आवश्कता है (इफि. ५:२१, २२)। रुचिकर बात यह है कि १कुरि १६:१६ में यूनानी भाषा में भी यही शब्द (upotaso अर्थात उपोटासो) का प्रयोग किया गया है कि कलीसिया के सदस्य अपने कलीसिया के अगुवे के अधीन रहें, जैसे (इफि. ५:२१, २२) में पत्नी पति के अधीन रहने के लिए बताया गया।

ख) उसी प्रकार पति भी निस्वार्थ भाव से सेवा, प्रेम, और अपनी पत्नी के प्रति समर्पित बना रहें (इफि ५:२५)।

३) हर संगति के अस्तित्व और सही प्रकार से कार्य करने के लिए हर एक प्रकार के संगतिओं को सम्बन्धों की स्थिति का सम्मान करना चाहिये।

टिप्पणियाँ —

४) कलीसिया के अंदर कलीसिया के अगुवे और सदस्य उनके ढांचे और कार्यों को करने की भूमिका अलग अलग है, तौभी, वे अपनी पहचान में एक बराबर हैं क्योंकि उनकी पहचान मसीह में है।

५) पति-पत्नी परिवार की भूमिका के ढांचे और कार्यो में अलग-अलग हैं, तौभी, वे अनपी पहचान में एक हैं क्योंकि उनकी पहचान मसीह में है।

क) पति और पत्नी को उनकी समानता को पहचानना चाहिये।

ख) उनको यह भी समझना चाहिये कि वे भिन्न हैं और दोनों को अलौकिक ठहराये गए कार्यों और भूमिकाओं के लिए मसीह के अधीन आकर इस क्रम में उसकी सेवा करें।

अपना उदाहरण लिखें

चर्चा का बिन्दु

चर्चा को आगे बढाने के लिए और प्रश्नों के उतर देने के लिए पिछली अवधारणा का उपयोग करें।

टिप्पणियाँ —

ग. विवाह के कार्यात्मक भुमका क्या है?

१. एक सही मकसद।

क. आत्मा से भरे जाने और मसीह के भय में एक दूसरे को अधीन (इफि ५:१८, २१) करने की आज्ञा (इफि ५:२२ -२३) में विवाह की भूमिका के बारे में पौलुस की व्याख्या के परिचय के रूप में कार्य करती है।

ख. यह परिचय इस बात ओर रौशनी डालता है की मसीह के अधीनता में कौन है, परन्तु इस पर नहीं कि कौन किसके ऊपर है।

१) मुख्य बात यह है कि मसीह की इच्छा अनुसार पति-पत्नी एक दूसरे के साथ जुड़े रहें।

२) उन्हें ठहराए हुए ढांचे का पालन करना चाहिये, सही उद्देश्य के साथ आपकी विशेषकर विवाह की भूमिका में कार्य करने के सम्बन्ध में आदरपूर्वक मसीह की आज्ञाकारिता है।

क) एक पति जो निस्वार्थ भाव से प्रेम नहीं करता, देखभाल और अपनी पत्नी की अगुवाई नहीं करता वह मसीह की आज्ञा नहीं मानता।

ख) एक पत्नी जो अपने पति के अधीन नहीं रहती और पति का आदर नहीं करती वह मसीह की आज्ञा नहीं मानती।

ग. यदि हम मसीह के सही उद्देश्यों के साथ अधीनता और आज्ञाकारिता को अपना मकसद नहीं बनने देते हैं, तब हम अपने साथी की ज़िम्मेदारी पर ध्यान देना शुरू करेंगे।

१) हम अपनी भूमिका को दूसरे की भूमिका के पूरे होने पर निर्भर करना शुरू कर देंगे।

२) हुम अपने विवाहों में अपने "अधिकारों" के ऊपर केन्द्रित होने लग जायेंगे, बजाय अपने विवाहों की जिम्मेदारियों पर।

३) यह सब स्वार्थ और झूठे प्रेम की ओर लेकर जाता है।

४) एक स्वस्थ विवाह में, एक पति-पत्नी विवाह की अपनी भूमिकाओं की जिम्मेदारियों से अपनी भूमिकाओं में कार्य करने के लिए प्रेरित होते हैं न कि उनकी भूमिकाओं के विशेष अधिकार।

५) और इन सबसे बढकर, वे मसीह की आज्ञा का पालन करने और उसे प्रसन करने की बात से प्रेरित रहते हैं।

टिप्पणियाँ —

२. पत्नी की भूमिका है **अधीनता**।

क. पत्नी की अधीनता का महत्व।

१) उसे अधीनता में रहकर सीखना है (१ तिमु २:११)।

२) उसे अधीनता के बारे में सिखाना है (तीतुस २:५)।

३) उसे अपनी अधीनता के द्वारा प्रचार करना चाहिये (१ पत ३:१)।

ख. अधीनता क्या नहीं है।

१) अधीनता उत्पीडन नहीं है।

२) अधीनता कि यह विकृति मनुष्य के बगीचे में पाप में पड़ने का परिणाम है।

लेखक का बाइबल अध्ययन

उत ३:१६ और उत ४:७ का अध्ययन

"इच्छा" शब्द का अर्थ क्या है?" (ध्यान दें: "इच्छा" शब्द के लिए इब्रानी भाषा में "teshuka अर्थात तेशुका" आया है, और उत्पति की किताब में इन्ही दो जगहों में हम इस शब्द को पाते है)।

पहला, हमें ४:७ से देखना चाहिये कि यह "इच्छा" की "सकारत्मक" भावना नहीं है, यह अनुवाद जो ३:१६ में "इच्छा" को अपने पति के लिए एक स्त्री की शारीरिक इच्छा के साथ जोड़ती है, शायद इच्छुक की सोच (पुरुष की और सोच रखना) या फिर खराब बाइबल अध्ययन का परिणाम है।

बाहरी रूप से, "इच्छा" शब्द एक "नकारात्मक" अवधारणा है, ४:७ में, इसे नियंत्रण करने के लिए पाप की "इच्छा" के संदर्भ में प्रयोग किया जाता है। ३:१६ में, हम यह निष्कर्ष निकल सकते हैं कि स्त्री की "इच्छा" सकरात्मक नहीं है, (याद रखें, यह पाप में पड़ने की सजा या श्राप का हिस्सा है) जिस पेड़ के फल खाने के लिए मना किया गया था उस पेड़ के सम्बन्ध में अगुवेपन की स्थिति पर पत्नी ने बाग़ में अधीनता की अपनी स्वाभाविक भूमिका को नकार दिया। इस प्रकार, उसे पति को वश में करने की चाह में अब पत्नी की यह सजा है।

टिप्पणियाँ —

लेखक का बाइबल अध्ययन

उत्पत्ति ३:१६ और उत्पत्ति ४:१७ का अनुवाद

दूसरा, जैसे कि ४:७ में प्रभु कैन से कहते हैं कि पाप के ऊपर राज्य कर या उसका स्वामी बन जा, वैसे ही वह ३:१६ पति से कहते हैं की पत्नी पर राज्य कर। स्वाभाविक अधीनता को जबरदस्ती अस्वाभाविक अधीनता में बदल दिया है, स्मरण - करें: यह मानवजाति के पाप में पड़ने का परिणाम है (और मानवजाति के पाप में गिरने के बाद मसीह में उस से छुटकारा पाया गया है)।

पाप में पड़ने के बाद भ्रष्टाचार और उसके परिणाम स्पष्ट हैं। परमेश्वर का मकसद नहीं है (स्मरण रखें: छुटकारे के द्वारा इस शाप से छुटकारा पाया जा सकता है)।

पाप के भ्रष्ट पतन ने पत्नी के स्वेच्छा के अधीनता की इच्छा को पति को नियंत्रण में रखने की इच्छा में बदल दिया।

इसने पति के प्रेमी मुखियापन को भी अत्याचारी शासन या उत्पीड़न बनाकर भ्रष्ट कर दिया है।

३:१६ और ४:७, में अपनी तुलना को जरी रखेंगे तो हम यह कह सकते हैं कि यदि पति "अच्छा" कार्य कर रहा है (अर्थात, यदि वह अपनी पत्नी से प्रेम रखता है जैसे मसीह ने कलीसिया से प्रेम रखा है) तब पत्नी दरवाजे पर "दुबकी नहीं रहेगी" या वह पति को नियंत्रण करने की कोशिश नहीं करेगी।

यह हमारे विवाह के सम्बन्धों में चर्चा का बहुत महतवपूर्ण सत्य है। वे बहुत स्वाभाविक है। पाप उनको अस्वाभाविक बना देता है यदि पति – पत्नी को वैसे प्रेम करे जैसे करना चाहिये, तो इस बात की बहुत ज़्यादा सम्भावना होगी कि पत्नी के अधीन होने की स्वाभाविक प्रतिक्रिया देखने को मिलेगी, इसके विपरीत भी सही है, यदि पत्नी पति के अधीनता में रहे तो इस बात की बहुत ज़्यादा सम्भावना होगी कि पत्नी को अपनी पति से स्वाभाविक प्रेम की प्रतिक्रिया देखने को मिलेगी ।

टिप्पणियाँ

३) अस्वाभाविक रूप से जीवन जीना एक सजा है। यह वैसे है मानो हम नदी के बहाव के विपरीत जा रहे हो, या लकड़ी के दाने के विरुद्ध काटना यह उसके जैसा है मानो जो स्वाभाविक है हम उसका विरोध कर रहे हैं।

क) उस सोच के अनुसार परमेश्वर हमें बिलकुल भी दंडित नहीं करता है, हम आज्ञा न मानने, और इस प्रकार परिणामों का अनुभव करने के द्वारा हम स्वयं को दण्डित करते हैं (इस सिद्धांत को युह ३:१८, १९ में देखें)।

ख) यह एक सही जीवन है। पाप का परिणाम इतना अधिक नहीं होता है क्योंकि परमेश्वर हमें दण्ड देते हैं (यद्यपि वह हमको अनुशाषित करते हैं, देखें इब्रा १२:४-११, लेकिन, क्योंकि परमेश्वर के विरुद्ध जाना (पाप के लिए) मतलब कि हम सृष्टि और जो स्वाभाविक है उसके विरोध में जाते हैं। इसका परिणाम कुछ गलत (अप्राकृतिक) तरीके से करने के द्वारा स्वयं को पीड़ा पहुँचाने में होता है (देखें रोमियों ६:२३; यूहन्ना ३:१८, १९)।

लेखक का उदाहरण:

समानता #१: यदि आप हथोड़े को कील मार रहे हो और आप अपनी ऊँगली को कील के ऊपरी सिरे पर रख देते हो तब आप दर्द को महसूस करेंगे। यह सजा उन परमेश्वर की ओर से नही मिली जिन्होंने उस समय आपको आपकी गलती के लिए भुगतान करने का फैसला किया, ये उसका परिणाम है जो कार्य हमने गलत तरीके से किया था।

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ –

लेखक का उदाहरण:

समानता #२: यदि आप फुटबाल खेल रहे हैं और गोल करने की कोशिश कर रहे हैं और बोल के आगे आगे दोड़ रहें हैं और बचाव करने वाले खिलाडी भी तो रेफरी आपको "दूसरी तरफ" को बुलाएगा, और आप रेफरी द्वारा दण्डित किये जायेंगे क्योंकि आपने कुछ गलत किया है, रेफ़री आपको दण्डित नही कर रहा है, आप स्वयं अपने को दण्डित कर रहे हो।

अपना उदाहरण लिखें:

लेखक का उदाहरण:

समानता #३: एड्स नामक ये एक घटक बीमारी पापियों के विरुद्ध परमेश्वर का इतना बड़ा न्याय नहीं है, क्योंकि यह परमेश्वर की स्वाभाविक सृष्टि के क्रम के विरुद्ध कार्य करने का परिणाम, परमेश्वर उस व्यक्ति को दंड या उसका न्याय नहीं करते जिसका जीवन यौन त्रुटि में व्यतीत होता है, क्योंकि वह व्यक्ति परमेश्वर की व्यवस्था के विरुद्ध में जाकर स्वयं को ही दण्डित करता है। वास्तव में, कुछ समय के लिए हम स्वयं ही अपना न्याय करता हैं (देखें यूहन्ना ३:१८,१९; १ कुरि ११:३१; मती ७:१, २)।

अपना उदाहरण लिखें:

टिप्पणियाँ —

ग. बाइबल की अधीनता क्या है?

१) यह **निर्भरता** है।

क) इफि ५:२१-२४ में पौलुस विवाह के सिधान्त की व्याख्या करने के लिए मसीह की देह के सिधान्त का इस्तेमाल करते हैं (जिसको उन्होंने इफि १:२२, २३; ४:१५, १६ में पहले ही परिभाषित कर दिया है)।

ख) यह रुचिकर है कि ४:१६ में पौलुस यूनानी भाषा के शब्द "epichoragia अर्थात एपिकोरेगिया" का इस्तेमाल करते हैं (जिसका अनुवाद है "पूर्ति") कि इस बात को दिखा सके की देह उसके पोषण को और जीवन को और निर्देश को सिर से प्राप्त कर रही है। यह वही शब्द एक तकनीकी शब्द था जो उस समय के दौरान इस्तेमाल किया गया था कि पति अपने ज़िम्मेदारी को ओनी पत्नी के लिए उसकी बुनियादी आवश्कताओं को प्रदान करने के लिए प्रगट कर सके।

ग) इफि. ५ में जब पौलुस मसीह की देह की समानता को पत्नी की अधीनता की भूमिका की व्याख्या करते हुए देखते हैं तब हम इसके सम्बन्ध को, इफि ४:१६ के साथ जोड़कर देख सकते हैं। अधीनता का महत्वपूर्ण हिस्सा निर्भरता की भावना को स्वीकार करना और उसका अभ्यास करना है।

घ) जो पत्नी अपने पति पर निर्भर रहती है वह स्वाभाविक रूप से तर्कयुक्त होती है। उत्पत्ति २ में हमने देखा कि कैसे स्त्री की रचना पुरुष की सृष्टि पर निर्भर है।

अपना उदाहरण लिखें:

चर्चा का बिन्दु

आज के समाज की रौशनी में बाइबल आधारित अधीनता और घर से बहार स्त्रियों को काम पर रखने के दबाव पर चर्चा करे (पश्चिमी संस्कृति के आधार पर)।

टिप्पणियाँ —

२) यह **अधीनता** है।

क) पुनः, हम मसीह की देह की समानता में सिर की अधीनता का उल्लेख कर सकते हैं।

ख) इस अधीनता में सिर के प्रति प्रेम और उसके लिए उत्पादन है (प्रचार कार्य, अच्छी गवाही, और प्रतिष्ठा, आदि)।

ग) हम इसी प्रकार की विनम्र अधीनता के कार्य उस पत्नी में देख सकते हैं जिसके बारे में तीतुस २:४, ५ में पाया जाता है।

(१) वह अपने पति से प्रेम करती है (पद ४)।

(२) वह समझदार और शुद्ध है (पद ५: वह पति की अच्छी प्रतिष्ठा को बनाये रखती है)।

(३) वह घर पर काम करती है (पद ५: वह उसके लिए उपजाऊ है)।

(४) हम इस प्रकार के कार्य नीतिवचन ३१ की स्त्री में देखते हैं। वह उपजाऊ है और वह पति की अच्छी प्रतिष्ठा को बनाये रखती है)। (देखें पद ११, १२, १५, १८, २३)।

अपना उदाहरण लिखें:

चर्चा का बिन्दु

बाइबल आधारित अधीनता पर चर्चा करने के लिए पिछली अवधारणा का इस्तेमाल करें।

टिप्पणियाँ —

३) यह आपके पति के लिए सम्मान और आदर है।

क) पढ़ें इफि. ५:३३।

ख) अधीनता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा आदर करना है।

ग) पौलुस के दिनों में, यह पत्नियों द्वारा क़ानूनी आवश्कता के रूप से किया जाता था। मसीही पत्नियों की अधीनता इस से कहीं अधिक आगे तक जानी चाहिये। यह निष्कपट होना चाहिये, वास्तविक, और मसीह के भय (आदर) के द्वारा प्रेरित और उनकी चीजों के क्रम में होनी चाहिये।

घ) यह मसीहियत के भीतर के संदर्भ में बताया गया है, सामान्य रूप से, "मसीह के भय में एक दूसरे की" अधीनता को स्वीकार करते हैं (इफि ५:२१)।

अपना उदाहरण लिखें:

चर्चा का बिन्दु

तब पति पर क्या प्रभाव पड़ता है जब उसको यह पता चलता है कि उसकी पत्नी उसका आदर नहीं करती है? तब उसका क्या प्रतिउत्तर होता है जब उसकी पत्नी उसका आदर नहीं करती है और यहाँ तक कि वह सार्वजनिक स्थान में भी उसका आदर नहीं करती है?

टिप्पणियाँ –

घ. अधीनता के विषय में निष्कर्ष।

१) पत्नी को अधीनता अलौकिक क्रम के आधार पर समझनी चाहिये। वह स्वयं को उसी तरस से देखें जैसे वह अलौकिक रूप से उसकी ठहरायी हुई स्थिति को स्वीकार कर सके।

क) इस प्रकार, उसकी अधीनता उसकी आज़ादी और प्रेम पर आधारित होनी चाहिये न कि विवशता और भय पर आधारित हो।

ख) वास्तव में, कलीसिया को अधीनता में रहने के लिए जबरदस्ती नहीं की गयी, वह अपनी स्वेच्छा से स्वयं को समर्पित करती है, और यह इच्छा रखती है कि अपने सिर या मुखिया के प्रति आज्ञाकारी रहे।

ग) उचित रूप से, एक पत्नी की अपने पति के अधीन होने की प्रेरणा उसके परमेश्वर के भय के मानने पर आधारित होनी चाहिये (इफि. ५:२१) अर्थात, यह परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने की इच्छा पर आधारित होना चाहिये।

२) एक पत्नी को यह समझना और स्वीकार करना चाहिये कि उसकी अधीनता उसके पति के प्रति उसकी इच्छा पर निर्भर नहीं करती कि वह अपनी भूमिका को पूरी करे।

क) उसकी प्रेरणा शुद्ध होनी चाहिये, उसकी प्रेरणाओं के आधार पर मसीह को प्रसन्न करने के लिए शुद्ध होनी चाहिये, उसकी आँखें उन पर लगी रहनी चाहिये, न कि उसके पति के ऊपर।

ख) यदि उसकी आँखे उसके पति के ऊपर होगी तो, तो वह असफल हो जाएगी क्योंकि उसके पति असफल होंगे, उसकी अधीनता उसके पति के कार्योंपर निर्भर नहीं करती।

ग) यदि उसकी आँखे मसीह के ऊपर होगी तो, तब वह असफल नहीं होगी क्योंकि मसीह असफल नहीं होते, उसकी अधीनता बिना शर्त के होनी चाहिये।

(१) उसकी इच्छाएं इस बात पर प्रेरित होनी चाहिये कि वह अलौकिक क्रम में कार्य करें।

(२) यह उसकी इच्छाओं से प्रेरित होनी चाहिये कि वे धार्मिक बने (परमेश्वर के समक्ष निर्दोष रूप से खड़ा होना)।

टिप्पणियाँ —

३) यहाँ हम अच्छे वैवाहिक जीवन के लिए मुख्य कुंजी सिद्धांत को स्थापित कर सकते हैं पति पत्नी को अपनी ज़िम्मेंदारियों के ऊपर केन्द्रित होना बजाय दूसरों की ज़िम्मेंदारियों पर (मती ७:३-५)।

क) इसमें जो मुख्य बिन्दु यह है यदि उसको लागू किया जाए, तो यह अस्वस्थ विवाह को सही कर देगा।

(१) पत्नी की अधीनता स्वाभाविक रूप से पति को प्रेम और अगुवाई के लिए प्रेरित करेगी।

(२) पति का प्रेम और अगुवाई स्वाभाविक रूप से पत्नी को अधीनता में रहने के लिए प्रेरित करता है।

ख) अस्वस्थ विवाह के ज़्यादातर परिणाम इस वजह से होते हैं क्योंकि पति-पत्नी अपनी ज़िम्मेंदारियों पर केन्द्रित होने के बजाय दूसरों की ज़िम्मेंदारियों पर ज़्यादा केद्रित रहते हैं।

(१) जब ऐसा होता है, तो पति **जबरदस्ती** कोशिश करता है कि पत्नी अपनी अधीनता कि भूमिका को निभाए, और पत्नी **हेरफेर** करने की कोशिश करती है कि पति अपने अगुवेपन की भूमिका को पूरा करे।

(२) यह हमें याद दिलाता है की पाप में गिरने से विवाह की भूमिका का रूप कैसे बिगड़ गया (समीक्षा करें उत्पत्ति ३:१६ और ४:७)।

(३) पति **अत्याचार** करता है (अधिकार चलाता है)।

(४) पत्नी **हेरफेर** करती है (नियंत्रण करने की कोशिश करती है)।

टिप्पणियाँ —

लेखक की टिप्पणियाँ:

मसीह का प्रेम बनाम सांसारिक प्रेम

आईये सांसारिक और शारीरिक प्रेम के मध्य की भिन्नता को पहचाने ("५०/५०" प्रेम कहा जाता है), और मसीही प्रेम या अगापे प्रेम ("१००/१००" प्रेम कहा जाता है)।

शारीरिक ("५०/५०") प्रेम स्वार्थी प्रेम है हर साथी अपना अपना आधा हिस्सा देता है, और विवाह में मात्र ५०% के प्रयास ही डालते हैं हर एक व्यक्ति इस चाहत के साथ देता है कि दूसरा व्यक्ति भी उतना ही हिस्सा दे। वास्तव में यह एक स्वार्थीपन है।

मती ५:४६-४८ में यीशु ने इस प्रकार के प्रेम के कपटीपन को उजागर किया है।

मसीही प्रेम "अगापे" है या बिना शर्त का प्रेम ("१००/१००")। इस प्रकार का प्रेम बिना शर्त का प्रेम है जो अपने अपने बारे में सोचे बिना अपने साथी की सफलता के लिए समर्पित है हर एक साथी अपना सम्पूर्ण हिस्सा देता है या विवाह के लिए १००% प्रयास करता है। हर एक साथी बिना कुछ पाने की मंशा से एक दूसरे की मदद करता है यहाँ तक की अपना खर्चा करता है और उसकी बड़ी कीमत भी चुकता है।

पौलुस ने प्रेम की व्याख्या १ कुरि १३:५ में किया है कि यह अपनी भलाई नहीं देखता"

मसीही विवाह "अगापे प्रेम" से पूरी तरह भरा हुआ होना चाहिये और "१००/१००" प्रेम का अभ्यास करें। पति-पत्नी बिना किसी चाहत के अपनी अपनी भूमिका को निभानी चाहिये या और कुछ भी वापस पाने की चाहत न हो उनके लक्ष्य शुद्ध होने चाहिये शुद्ध लक्ष्य मसीह द्वारा ही प्रेरित होते हैं।

टिप्पणियाँ —

३. पति की भूमिका मुखियापन है।

क. मुखियापन का अर्थ है।

१) यूनानी में "मुखिया" शब्द "kefalay अर्थात केफालय" है यह उस व्यक्ति की तरफ बताता है जो पद में बड़ा है।

२) मुखियापन दो मुख्य विचारों की तरफ ले जाता है: **अधिकार** और **दिशानिर्देश।**

ख. अधिकार।

१) अधिकार प्रभुत्व का परिणाम नहीं है, यह सेवा का परिणाम है (मती २३:११)।

क) जब पति अधिकार को अपना "हक" समझने लगे तब वह उसे अनिवार्य रूप से उसकी मांग बना लेगा वह प्रभुत्व का अभ्यास करेगा न कि सेवा का और इसका परिणाम एक अस्वस्थ विवाह होगा।

ख) जब पति अपने अधिकार को ज़िम्मेदारी के रूप में दिखाता है, तो वह उसके लिए कार्य करेगा और उसको कमा लेगा, वह प्रभुता करने की बजाय सेवा करेगा, इसका परिणाम एक स्वस्थ विवाह होगा।

२) अधिकार पतन का परिणाम नहीं है, यह सृष्टि का परिणाम है।

क) हमें यह बात याद रखनी चाहिये की पुरुष के यह मुखियापन की भूमिका अदन के बाग़ में मिली थी।

(१) आदम को अधिकार दिया गया था की वह जानवरों के नाम रखें (उत्पत्ति २:१९)।

(२) उसने अपनी पत्नी का नाम भी रखा (उत्पत्ति ३:२०)।

ख) अब्राहम और सारा के छुडाये हुए विवाह में अब्राहम ने इस अधिकार का अभ्यास किया पत्नी की अधीनता और पति के अधिकार के खण्ड में हम देखते हैं कि सारा अब्राहम को "प्रभु" कहकर पुकारती हैं।

टिप्पणियाँ —

अपना उदाहरण लिखें

ग. निर्देश।

१) पति के मुखियापन में निर्देश के पहलु के साथ अगुवापन और पति की तरफ से की गयी पहल है।

क) फिर से इस बात पर ज़ोर देना चाहिये कि अगुवापन सेवा का परिणाम है (देखें लूका २२:२६)। पति परिवार का अगुवा तब तक नहीं है जब तब वह परिवार का सेवक नहीं है।

ख) बाइबल में, अगुवापन और पहल का किया जाना पुरुष की भूमिका की पहलुओं के रूप में देखा गया है।

ग) उत्पत्ति ३:२० में, हम देखते हैं कि पुरुष इस पहल को लेता है की वह स्त्री का नाम रखें। जो लोग बाइबल की मुखियापन की धारणा को नकारते हैं वे इस बात पर बहस करेंगे कि आदम ने ने हव्वा के साथ सलाह की होगी और उसको यह अनुमति दी होगी की उसके साथ मिलकर यह निर्णय ले।

घ) उत्पत्ति ३:१७ में, यह स्पष्ट हो जाता है कि पति पत्नी को निर्देश दे और उसकी अगुवाई करे। परमेश्वर के अनुसार पुरुष की गलती यह है, कि वह स्त्री की अगुवाई करने के बजाय उसको अनुमति देता है कि स्त्री उसकी अगुवाई करे।

ङ) याद रखें, मनुष्य का पाप में गिरना उस से ज़्यादा जटिल था बजाय इसके कि निषिद्ध फल के टुकड़े को खाना। पुरुष के पाप में गिरने की जड़े विद्रोह में से हैं। पुरुष को अगुवाई करनी थी। पर उसने नहीं की। स्त्री ने अगुवाई की। उन्होंने परमेश्वर की सृष्टि और उसके रचनात्मक क्रम के विरुद्ध विद्रोह किया।

टिप्पणियाँ —

२) अगुवेपन और पहल करने का कार्य जो अलौकिक क्रम में है, उसको पत्नी पर जबरदस्ती नहीं करना चाहिए। बल्कि, यह प्रेम से स्थापित होता है।

क) पौलुस इस भिन्नता को कुलु ३:१८, १९ में स्थापित करते हैं वह कहते हैं कि पति अपनी पत्नी से प्रेम रखें न कि उनके विरुद्ध कड़वाहट को रखें।

ख) जो पति अपनी पत्नी के विरुद्ध कड़वाहट रखता है वह अपनी अगुवाई को उस पर डालने की कोशिश करेगा। वह उसके प्रतिउत्तर की घटी में बेसब्र हो जायेगा और फिर उसको वह जबरदस्ती अधीनता में लेने की कोशिश करेगा।

(१) इस प्रकार की अगुवाई जो स्वयं से किसी के ऊपर जबरदस्ती की जाती है वह बाइबल आधारित सच्ची अगुवाई नहीं है।

(२) अगुवाई को एक ऐसे अगुवे के द्वारा परिभाषित किया जाता है जो लगातार उस व्यक्ति के द्वारा परेशान है जिसकी वह अगुवाई कर रहा है और लगातार वह उस व्यक्ति की गलतियों पर ध्यान लगाए हुए है।

ग) पति जो अपनी पत्नी से प्रेम करता है वह धीरजवन्त है और उसकी निन्दा नहीं करता। उसकी अगुवाई और पहल को पत्नी द्वारा अधीनता में स्वीकार किया जाता है।

अपना उदाहरण लिखें:

चर्चा का बिन्दु

पिछली धारणा का इस्तेमाल करके बाइबल आधारित प्रभारी की चर्चा को बढ़ावा दें और किसी भी प्रश्न का उत्तर दें।

टिप्पणियाँ –

घ. मुखियापन का कुंजी कार्य प्रेम है।

१) "अपनी-अपनी पत्नियों से प्रेम रखें" (इफि ५:२५) पतियों के लिए है "अपने पति के अधीन रहो" (इफि ५:२२) यह पत्नियों के लिए है।

क) मसीह का प्रेम उसकी कलीसिया के लिए पति का आदर्श है।

(१) यह बिना शर्त के प्रेम है।

(२) यह असीमित प्रेम है।

ख) यह प्रेम गहरी समझदारी के साथ पत्नी की एक महान कीमत के साथ प्रेरित होना चाहिये। यह मसीह के एक जैसी समझदारी जो एक कलीसिया की बड़ी कीमत है। यह हमारी स्वेच्छा से एक जन दूसरे के लिए स्वयं को देने के लिए अगुवाई करता है (इफि ५:२५)।

ग) यह प्रेम बलिदानात्मक प्रेम होना चाहिये, यह क्रूस तक जाना चाहिये।

घ) यह प्रेम दयावंत प्रेम होना चाहिये, पत्नी के साथ दुःख को सहने की समझ की स्वेच्छा होनी चाहिये, और उसके लिए संवेदनशील होना चाहिये।

(१) इससे पति को प्रेरणा मिलनी चाहिए कि वह "पत्नी की इच्छा अनुसार चले"

(२) यह उसको सक्षम करे की वह उसको अपनी देह के समान प्रेम करे (इफि ५:२८)।

२) वचन कहता है, "उन्होंने स्वयं को उसके लिए दे दिया" (इफि ५:२५)।

क) यह "अगापे" प्रेम का ह्रदय है।

(१) मसीह ने कलीसिया को स्वयं को देकर प्राप्त किया।

(२) आदम ने हव्वा को स्वयं को देकर प्राप्त किया (उसकी पसली)।

(३) पति पत्नी को स्वयं को उसके लिए देकर उसे प्राप्त करता है।

ख) इस प्रकार, एक पति स्वयं के लिए "पत्नी को लेने के लिए" इतना नहीं करता जितना वह स्वयं को पत्नी को देता है।

टिप्पणियाँ –

अपना उदाहरण लिखें:

चर्चा का बिन्दु

पिछली धारणाओं का इस्तेमाल करके "अगापे" प्रेम के बारे में चर्चा करने को बढ़ावा दें और किसी भी प्रश्न का उत्तर दें।

ग. मुखियापन के स्वभाव की मुख्य कुंजी **धीरज और समझ** हैं।

१) पति अपनी पत्नी के साथ समझ के तरीको के साथ जीयें (देखें १ पत. ३:७)।

क) वह इस को समझें कि उसके साथ **संगी वारिस** हैं इसलिए मसीह की पहचान के संदर्भ में एक समान हैं।

ख) उसे यह भी समझना चाहिये कि वह एक कमज़ोर पात्र है। वह सम्बन्धों के क्रम में उसके अधीन है।

२) पति – पत्नी को समझदारी के साथ प्रतिउत्तर दे, अर्थात वह पहल करे और यह जानते हुए उसकी अगुवाई करे कि उसके लिए यह स्वभाविक नहीं है कि वह पति की अगुवाई करें।

३) १ पत ३:७ में, यह "आपकी" प्रार्थना का बिन्दु है (यूनानी भाषा में बहुवचन है) कि आपकी प्रार्थनायें रुख न जाएँ।

क) जो पति अपनी पत्नी की भूमिका को नहीं समझता और जो अपने अलौकिक ठहराये हुए मुखियापन के औधे को स्वीकार नहीं करता वह अपनी पत्नी की अगुवाई प्रार्थना करने के लिए पहल नहीं करेगा।

ख) पद जो पति और पत्नी के लिए बताता है कि जो एक साथ प्रार्थना नहीं करते हैं क्योंकि पति को विवाह की भूमिका की समझ की घटी है।

टिप्पणियाँ –

लेखक के उदहारण:

कभी कभी पति का स्वाभाव हर बात में पहल करते-करते थक जाता है, वह बोलता है,: **क्यों वह पहल और प्रार्थना में अगुवाई नहीं कर सकती?**

इसके लिए एक मजबूत पति की आवश्कता है जो विवाह की बाइबल आधारित भूमिका को समझता हो कि पत्नी की अगुवाई प्रार्थना में करे। ये अगुवाई की **वास्तविकता** है हम ये कह सकते हैं कि ये अगुवाई का कठिन हिस्सा है।

हां, पतियों के पास अधिकार है, परन्तु उनके पास ज़िम्मेदारी भी है, एक नम्र और प्रभावी पति जो अपने अधिकार से ज़्यादा अपने ज़िम्मेदारी के प्रति सजग रहता है।

चर्चा का बिन्दु

पिछली धारणाओं का इस्तेमाल करके चर्चा को बढावा दे कि पति को समझ और धीरज की आवश्कता है। साथ ही, अगुवाई के किसी भी प्रश्न का उत्तर दें।

अपना उदाहरण लिखें:

घ. विवाह के सम्बन्धों की समानता।

टिप्पणियाँ —

विवाह की समानता #१:

त्रिएकता (देखें १ कुरि. ११:३)।

यह ज़रूरी है पति-पत्नी इस बात को समझ जाये कि मसीह में उनकी पहचान के सम्बन्ध एक बराबर हैं, और उनके मुखियां और अधीनता के सम्बन्ध में उनके सम्बन्धों की भूमिका जो एक दूसरे के प्रति है।

यह बात त्रिएकता के साथ भी वैसा ही सत्य है। पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा तीनों एक बराबर हैं, वे सब परमेश्वर हैं, उसके बावजूद पुत्र पिता की अधीनता में है और पवित्र आत्मा पुत्र की अधीनता में है।

क्रूस पुरुष और स्त्री की एक समानता को प्रगट करता है (गल ३:२८)। उसके बाद भी यह पति-पत्नी के बीच के सम्बन्धों के अलौकिक ढांचे को रद्द नहीं करता क्रूस पुत्र और पिता जो त्रिएकता के अंदर समानता है उसको प्रगट करता है (फिल. २:६)। उसके बावजूद भी त्रिएकता के भीतर जो अलौकिक सम्बन्धों का ढांचा है उसे रद्द नहीं करते (देखें १ कुरि. १५:२७, २८)।

यह भी ध्यान दें, बाइबल आधारित प्रगति को जो पुत्र सिर्फ वही कर रहा है जो वह पिता को करते हुए देखता है उसी की व्याख्या करता है (यूह ५:१९), और पवित्र आत्मा भी वही बोलता है जो वह पुत्र को कहते हुए सुनता है (यूह १६:१३, १४)।

यह त्रिएकता का विरोधाभास है। उनमें के तीनों परमेश्वरत्व के स्वाभाव में बराबर है फिर भी भिन्न है यह शायद, यह विवाह का भी विरोधाभास है, पति-पत्नी एक बराबर हैं परन्तु भिन्न हैं (इफि ५:३१, ३२ में "भेद" के विचार पर ध्यान दें)।

टिप्पणियाँ —

विवाह की समानता #२:

यहोवा और इस्राएल के बीच का सम्बन्ध।

पुराणी नियम में विवाह, परमेश्वर और के बीच के सम्बन्ध के स्वाभाव को प्रगट करता है।

सामन्यता, हम श्रेष्टगीत की किताब को पद सकते हैं वहा हम देख सकते हैं कि कैसे वहां पर समानता को इस्तेमाल किया गया है।

विशेष कर, हम भविष्यद्वक्ताओं का अध्ययन कर सकते हैं कैसे वहां बार-बार इस समानता को बताया गया है (विचार करें यशा ५४:१-८; ६२:४, ५; यिर्म. २:२; ३:६-१४; ३१:३२; यहे. १६; यहे. २३; होशे १-३; विशेषकर होशे २:२)।

विवाह की समानता #३:

मसीह और कलीसिया के बीच का सम्बन्ध।

हमने इस समानता का इस्तेमाल पूरे पाठयक्रम के दौरान किया है मसीह पति के लिए समानताओं के सिर हैं। अधीन कलीसिया पत्नी के समान है। वास्तव में, भेद तो बड़ा है (इफि ५:३२)।

टिप्पणियाँ

ङ. हमारे पाठयक्रम का निष्कर्ष

१. मसीह हमारे विवाह के केंद्र होना चाहिये, आज्ञापालन और उनको प्रसन करना हमारे वैवाहिक जीवन के लक्ष्य के कार्य करने की भूमिका होनी चाहिये।

२. मुखियापन/अधीनता का सम्बन्ध पति-पत्नी को इस विषय पर नहीं समझना चाहिये कि पति क्या है और पत्नी क्या नहीं है। यह अलौकिक क्रम में देखना चाहिये कि वे एक दूसरे को पूर्ण करें। हर एक साथी समान रूप से महत्वपूर्ण है। जबकि वे बराबर हैं पर वे एक जैसे नहीं है।

३. यौन सम्बन्धों की आज़ादी जो है ही नहीं उसको स्थापित करने की कोशिश न करें, पुरुष - पुरुष है स्त्री - स्त्री है। पुरुष आजाद पुरुष तभी बन सकता है। स्त्री आजाद स्त्री तभी बन सकती है। परिपूर्णता और आज़ादी अलौकिक क्रम के सम्बन्धों के अंदर ही पाई जा सकती है, न कि इसके बाहर पुरुष ओर स्त्री के लिए परिपूर्णता और आज़ादी उपलब्ध है, क्योंकि वे बराबर हैं इसलिए नहीं कि वे एक जैसे हैं।

४. जब पुरुष और स्त्री परमेश्वर द्वारा स्थापित क्रम को स्वीकार और उसका अभ्यास करते हैं, तब वे मुखियापन को उत्पीडन और अधीनता को दासत्व नहीं समझते। वे मुखियापन और अधीनता को अपने विवाह में एक आज़ादी और आनंद के द्वार के रूप में देखते हैं।

विवाह

टिप्पणियाँ –